राष्ट्रीय सहारा
नई दिल्ली, बुधवार • 29 मई • 2019
www.rashtriyasahara.com

कांग्रेस में ऊहापोह

लोकसभा चुनाव में शर्मनाक पराजय के बाद कांग्रेस को नये सिरे से खड़ा होने के लिए और अपने आपको पुनर्जीवित करने के लिए ऐतिहासिक अवसर मिला है, लेकिन पार्टी में अंदरूनी स्तर पर जिस तरह का सियासी घमासान मचा हुआ है, उससे लगता नहीं कि कांग्रेस अवसर का लाभ उठा पाएगी। इस समय कांग्रेस में दोषारोपण करने और क्षत्रपों द्वारा इस्तीफा देने की होड़ मची हुई है। पराजय के बाद की यह स्वाभाविक प्रतिक्रिया है, इसलिए इसे अलग करके कांग्रेस को विचार करना चाहिए कि वह राजनीति में आखिर क्यों है? सचमुच में उसके पास कोई लोकतांत्रिक विचार और सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रम है, तो वह क्या है, और

उसकी वैचारिकी भाजपा से किस रूप में अलग है। उसे यह भी बताना होगा कि उसकी वैचारिक भिन्नता किस तरह से देश के लिए हितकारी है। कांग्रेस की स्थापना से लेकर आजादी के करीब तीन दशकों बाद तक इसकी वैचारिकी बरगद के पेड़ की तरह थी, जिसकी छाया में सब समाहित थे। अगर आज सचमुच कांग्रेस के पास कोई विचार है तो पार्टी के नेतृत्व में झलकता न कि किसी व्यक्ति में। ठीक इसी तरह जैसे भाजपा के नेता और प्रधानमंत्री मोदी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। आने वाले वर्षों में मोदी की जगह कोई दूसरा नेता आएगा तब भी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद उसकी बुनियाद में होगा। दूसरी ओर, कांग्रेस का वैचारिक आधार सिकुड़ कर केवल मोदी विरोध पर केंद्रित हो गया है। पार्टी का संगठनात्मक ढांचा बिखर गया है। देश के सबसे बड़े सूबा उत्तर प्रदेश, जो प्रधानमंत्री दिया करता है, में दो तिहाई और बिहार के दो सौ प्रखंडों में कांग्रेस की इकाई नहीं है। आंध्र प्रदेश, प. बंगाल समेत अनेक राज्यों में पार्टी का झंडा-पोस्टर उठाने वाला कार्यकर्ता ढूंढ़ने से नहीं मिलता। वास्तव में कांग्रेस का वर्तमान संकट परिवार केंद्रित होने की वजह से ही है। परिवार और व्यक्ति की सीमा है। अगर उसके पीछे कोई विचार नहीं है, तो उसकी सफलता संदिग्ध रहती है। इसलिए कांग्रेस को पुनर्जीवित करने के लिए उसे गांधी परिवार की छाया से मुक्त होना पड़ेगा। इस परिवार को ही कांग्रेस अपनी जीवनदायिनी शक्ति मानती रहेगी तो परिवार की शक्ति चुकती भी है, जैसा इस समय दिखाई दे रहा है। यदि कांग्रेस गांधी परिवार के बिना अपनी कोई वैचारिकता स्पष्ट कर पाएगी तो बची रहेगी अन्यथा गांधी परिवार को अपनी केंद्रीय जीवन शक्ति मानकर चलती रहेगी तो नष्ट हो जाएगी।

राडार वाली थ्योरी सही

उम्मीद है कि पहले थल सेनाध्यक्ष और अब वायुसेना के एक वरिष्ठ अधिकारी के कहने के बाद कि बादलों या बरसात में राडार विमान को पूरी तरह डिटेक्ट नहीं कर पाते प्रधानमंत्री का मजाक उड़ाना बंद हो जाएगा। वस्तुतः चुनाव अभियान के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक टीवी चैनल को दिए साक्षात्कार में कहा था कि सेना के अधिकारी पाकिस्तान में हवाई बमबारी को एक दो दिनों के लिए टालना चाहते थे क्योंकि घने बादल छाए हुए थे तो मैंने उन्हें कहा कि इसका लाभ यह हो सकता है कि इसमें हमारे विमान उनकी राडार की नजरों से बच जाएं। इसके बाद निर्धारित 26 फरवरी को वायुसेना के विमानों ने बालाकोट से लेकर पाक अधिकृत कश्मीर में जैश-ए-मोहम्मद के आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया। प्रधानमंत्री के साक्षात्कार पर देश में मीडिया के एक बड़े वर्ग और बुद्धिजीवियों ने उनका मजाक उड़ाना

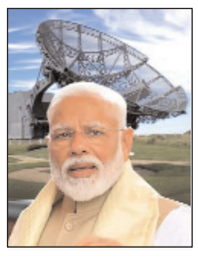

आरंभ कर दिया। राडारेन्द्र मोदी से लेकर न जाने क्या-क्या कहा गया। सोशल मीडिया पर कटाक्षों की बाढ़ आ गई। हमारे देश का दुर्भाग्य है कि किसी नेता से वैचारिक मतभेद को प्रकट करने के लिए उसका उपहास उड़ाया जाता है। किसी ने नहीं सोचा कि प्रधानमंत्री बैठक के कुछ अंश का विवरण दे रहे थे। अगर उनकी बात मानी गई और हवाई बमबारी हुई तो इसमें तथ्य होंगे। अब चुनाव समाप्ति के बाद करगिल युद्ध में शहीद स्क्वाड्रन लीडर आहुजा की याद में बठिंडा एयर बेस पर हुए श्रद्धांजलि कार्यक्रम के दौरान एयर मार्शल रघुनाथ नांबियार ने कहा कि घने बादलों के कारण राडार विमान को पूरी तरह से डिटेक्ट नहीं कर पाते। नांबियार के कुछ पहले एक कार्यक्रम में पत्रकारों के सवाल के जवाब में थल सेनाध्यक्ष जनरल विपिन रावत ने भी कहा था कि राडार अलग-अलग तकनीक पर काम करते हैं। कई प्रकार होते हैं। कुछ बादलों में विमानों को नहीं पकड़ पाते जबकि कुछ बादलों के रहते भी पकड़ लेते हैं। यह प्रकरण बताता है कि हमें ऐसे मामलों में जिम्मेवार समुदाय का परिचय देना चाहिए। प्रधानमंत्री कुछ कह रहे हैं तो उसमें वजन होगा। उनका अपनी जानकारी के आधार पर सैन्य अधिकारियों को दिया गया सुझाव था जिसे उनने स्वीकार किया तो उसमें दम रहा होगा। हमारा मानना है कि मजाक उड़ाने वाले इस प्रकरण को सबक के रूप में लें और आगे से त्वरित मजाक उड़ाना अभियान चलाने के पूर्व थोड़ी सत्यता की जांच कर लें।

चौं रे चम्पू/अशोक चक्रधर

शपथ-पत्र पर

चौं रे चंपू! हारे भए लथपथ परे ऐं और मोदी सपथ लै रए ऐं, तू सन्न ऐ कै प्रसन्न?

ञ्प्रसन्न हूं चचा! जीतने के बाद उनके भाषणों में जीत का दम्भ या पराजितों के लिए उपालम्भ नहीं था। एक अनुभववादी, व्यावहारिक चिंतक और भविष्यदृष्टा दिखाई दिया। उन्होंने अपने आपको फकीर कहा, महात्मा या संत नहीं। महात्मा हो चुके गांधी जी, संत हो चुके कबीर, फकीर मोदी को नई लकीर खींचकर सिद्ध करना होगा कि वे समाज के अंतिम व्यक्ति तक का उद्धार चाहते हैं। चुनावी अंकगणित छोड़कर अब वे देश में सौमनस्य की कैमिस्ट्री ला रहे हैं।

ञ्उनके कहे पै बिस्वास कल्लैं का?

ञ्क्यों नहीं? हमने इस चुनाव में इतिहास को करवट लेते देखा है। अभी तक हम वरिष्ठ नागरिकों ने विचारधाराओं का उलटना और तख्तों का पलटना देखा है। मार्क्सवाद वर्ग-संघर्ष को आधार बनाता है। दो ही वर्ग बताता है, शोषित और शोषक। गरीब और अमीर। अमीर वर्गशत्रु हो गया। हमारे देश में स्थितियां दूसरी थीं। हमारे यहां क्लास स्ट्रगल नहीं, कास्ट स्ट्रगल था। भूमंडलीकरण के बाद भी यह बात साम्यवादियों की समझ में नहीं आई? मोदी कहते हैं कि अब देश में दो ही जाति बचेंगी एक गरीब, इतना कहकर उन्होंने एक बड़ा लम्बा पॉज लिया, ताकि लोग अनुमान लगाएं, आगे क्या कहेंगे, अमीर या शोषक या पूंजीपति! लेकिन उन्होंने कहा कि दूसरी जाति गरीब को गरीबी से निकालने वाली। मैं तो सुनकर मुग्ध हो गया चचा। धीरे-धीरे गरीबी जा रही है, लेकिन अमीरी भी और तेजी से आ रही है। 'फकीर' के खुद के लिए गरीबी-अमीरी कोई माने नहीं रखती, लेकिन वह ध्यान रखे कि देश का अंतिम नागरिक भी रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य और शिक्षा के लिए न तरसे, धार्मिक आधार पर भेदभाव न हो। गरीब का आकांक्षालोक नये समाज में उपलब्ध नई सुविधाएं चाहता है। मोबाइल, टेलीविजन, कूलर अब अमीरी के मानक नहीं हैं। अमीर का अधिक कमाया हुआ, गरीब के कल्याण में जाना चाहिए। मोदी कवि हैं, हृदय से चाहें तो ला भी सकते हैं। बहरहाल, मोदी जी, संकल्प और आत्मविश्वास लेकर शपथ-पथ पर जाइए। आपके नये अवतार की प्रतीक्षा है।

'रणछोड़दास' न बनें राहुल

कांग्रेस

प्रमोद जोशी

कांग्रेस अपने नेतृत्व-संकट से बाहर निकल भी आए तो भी संकट बना रहेगा। संकट नेतृत्व का नहीं पार्टी की साख का है। राहुल गांधी के इस्तीफे की चर्चा से पार्टी कार्यकर्ता का ध्यान असल सवालों से हट जाएगा। राहुल ने फिलहाल पद पर बने रहना मंजूर कर लिया है, पर चाहते हैं कि उनके विकल्प की तलाश जारी रहे। उनका विकल्प क्या होगा? विकल्प खोजा जा सकता है बशर्ते पार्टी में विकल्प खोजने की संरचनात्मक व्यवस्था हो। अभी उनका अध्यक्ष बने रहना ही सबसे बड़ा विकल्प है।

पार्टी को अपनी राजनीति को उसकी तार्किक परिणति तक पहुंचाना चाहिए। राहुल चाहते हैं कि पार्टी का नेतृत्व लोकतांत्रिक तरीके से तय हो तो उन्हें लंबा समय देकर पार्टी की आंतरिक संरचना बदलनी होगी। सच तो यह है कि पार्टी की कार्यसमिति भी मनोनीत होती है। राहुल अच्छे से जानते हैं कि लोकतांत्रिक संरचना इतनी आसान नहीं है। पर इसे बदलने में सफल हुए तो भारतीय राजनीति में उनका अपूर्व योगदान होगा। सच यह भी है कि उनके अध्यक्ष बनने के बाद पार्टी का आत्मविश्वास बढ़ा है। चुनावी सफलताएं भी मिली हैं। कहना गलत है कि वे पूरी तरह विफल हुए हैं। राहुल के बयानों से लगता है कि वे संजीदा राजनीति में दिलचस्पी रखते हैं, इसलिए देखना होगा कि उनकी 'संजीदा राजनीति' क्या शक्ल लेगी। सन 2017 के गुजरात विधानसभा के चुनाव के दौरान उन्होंने इस बात को कई बार कहा कि हम अनर्गल बातों के खिलाफ हैं।

संयोग से उन्हीं दिनों मणिशंकर अय्यर वाला प्रसंग हुआ और राहुल ने उन्हें मुअत्तल कर दिया यानी वे साफ-सुथरी राजनीति के पक्षधर हैं। इस बात को उन्हें अब स्थापित करना चाहिए। उनकी जिम्मेदारी बनती है कि लोक सभा की बहसों में शामिल हों। राष्ट्रीय राजनीति में सकारात्मक भूमिका निभाएं। राजनीतिक सफलता चुनावों की हार-जीत से ही तय नहीं होती। उन्हें एक श्रेष्ठ राजपुरुष (स्टेट्समैन) के रूप में सामने आना चाहिए। देश की राजनीति में प्रधानमंत्री की भूमिका है, तो विरोधी नेताओं की भी भूमिका है। इस भूमिका को वे किसी नये रूप में परिभाषित क्यों नहीं करते?

सही या गलत नेहरू-गांधी परिवार का नेतृत्व अब पार्टी की विचारधारा का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। राहुल चुनाव जीतकर नहीं आए थे। उन्हें यह पद राजनीतिक विरासत के रूप में मिला है, उन्हें इसका निर्वाह करना चाहिए। उनका इस मौके पर पद छोड़ना मैदान छोड़कर भागना माना जाएगा। पार्टी के पास विकल्प तलाशने की कोई व्यवस्था नहीं है। उसकी परंपरा रही है कि नेतृत्व पर जब भी संकट

आता है, सब मिलकर उसके समर्थन में आते हैं। नेता को शक्ति-संपन्न बनाते हैं। पार्टी को दो अलग-अलग मसलों पर विचार करना चाहिए। पहला यह कि क्या राहुल जो चाहते हैं, वैसा कर पा रहे हैं, या नहीं? दूसरा यह कि पार्टी जिस विचारधारा पर चल रही है, और जिन मुद्दों को उठा रही है, क्या वे प्रासंगिक हैं? क्या अपने मुद्दों को जनता की अपेक्षा-आकांक्षाओं से जोड़ पाने में विफल रही है? या उसकी पराजय के कारण कहीं और हैं? इधर-उधर से जो बातें छनकर आ रही हैं, उनसे लगता है कि राहुल को भी कुछ शिकायतें हैं। कहा जाता है कि वे खुलकर फैसले नहीं कर पा रहे। राजस्थान और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्रियों तय करते वक्त यह बात सामने आई। लोक सभा के लिए प्रत्याशी तय करते समय भी उन्हें लगा कि पार्टी के कुछ वरिष्ठ नेताओं और उनके बीच सहमति नहीं है। राहुल को संभवतः यह भी लगता है कि उनका आक्रामक अंदाज पार्टी के वरिष्ठ नेताओं को पसंद नहीं आया। खास तौर से 'चौकीदार चोर है' के नारे को लेकर बहस है। पता नहीं बहस पार्टी के भीतर है या नहीं, पर मीडिया में इसका जिक्र जरूर हो रहा है। कांग्रेस के वर्तमान संकट को लेकर काफी कयास हैं, पर एकबारगी सबको गलत कहना भी उचित नहीं है। तीन बड़े नेताओं के बेटों के बारे में कही गईं बातें पूरी तरह बेबुनियाद भी नहीं हैं पर कांग्रेस का वर्तमान संकट इन सब बातों से परे है।

राहुल के हटने से संकट का समाधान होने वाला नहीं। अलबत्ता, हटने से संकट बढ़ेगा। पार्टी में बड़े बदलावों की बातें हो रही हैं। बदलाव क्या होंगे? पिछले पांच साल के अनुभव के बाद जो बदलाव हो सकते थे, वे तो हो गए। राहुल कांग्रेस के बदलाव का हिस्सा हैं। उन्हें पूरा नेतृत्व संभाले अभी एक साल से कुछ ज्यादा समय ही बीता है। देश की राजनीति को समझने और उसके अनुरूप सही रणनीति अपनाने के लिए इतने साल पर्याप्त नहीं हैं। दूसरे विजय-पराजय अनुभवों का हिस्सा हैं। राहुल को पद क्यों छोड़ना चाहिए? क्योंकि पार्टी को विजय नहीं दिला पाए। इसे एकाउंटेबिलिटी कहा जाता है। पर हरेक पार्टी की अपनी कार्य-संस्कृति होती है। सन 1977 में हारने के बाद इंदिरा गांधी क्या कांग्रेस की नेता नहीं रही थीं? राहुल ही क्यों ममता बनर्जी, अखिलेश यादव, मायावती, तेजस्वी यादव और चंद्रबाबू नायडू क्या नेतृत्व छोड़ देंगे? हमारे राजनीतिक दलों की संरचना वैसी है ही नहीं, जिसमें नेतृत्व परिवर्तन ऑटोमेटिक हो। हार-जीत राजनीति का हिस्सा हैं। उन्हें बैठकर पहले देखना चाहिए कि सफलता क्यों नहीं मिली। रणदीप सुरजेवाला ने कहा है कि पार्टी इस हार को बड़े अवसर के रूप में ले रही है। बेशक, यह चुनौती है। राहुल को जल्द से जल्द अपने काम पर वापस आना चाहिए। ऐसा नहीं करेंगे तो कार्यकर्ता पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। कर्नाटक में जेडीएस-कांग्रेस की साझा सरकार संकटमय है। मध्य प्रदेश में सुगबुगाहट है। राजस्थान सरकार पर संकट नहीं है, पर सरकार के भीतर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के खिलाफ कई मंत्रियों ने आवाज उठानी शुरू कर दी हैं। मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री कमलनाथ कार्यमिति की बैठक में शामिल नहीं हुए। राहुल की जिम्मेदारी बनती है कि स्वयं समस्या न बनें। इस पराजय को वे संकट और विफलता मान सकते हैं पर यह एक मौका भी है, जब वे अपनी समझदारी से पार्टी को फिर से मुख्यधारा में वापस ला सकते हैं।

राहुल के सामने चुनौती है 'नई चमकदार कांग्रेस पार्टी' बनाना। कुछ महीनों बाद महाराष्ट्र, हरियाणा, झारखंड और दिल्ली में चुनाव होंगे। उन्हें उत्तर प्रदेश में समय देना चाहिए जहां पार्टी का आधार खत्म हो गया है। कम से कम इस वक्त 'रणछोड़ राजनीति' से बचना चाहिए।

> राहुल की जिम्मेदारी बनती है कि राष्ट्रीय राजनीति में सकारात्मक भूमिका निभाएं। राजनीतिक सफलता चुनावों की हार-जीत से ही तय नहीं होती। उन्हें एक श्रेष्ठ राजपुरुष (स्टेट्समैन) के रूप में सामने आना चाहिए। देश की राजनीति में प्रधानमंत्री की भूमिका है, तो विरोधी नेताओं की भी भूमिका है। इस भूमिका को वे किसी नये रूप में परिभाषित क्यों नहीं करते? उनका इस मौके पर पद छोड़ना मैदान छोड़कर भागना माना जाएगा

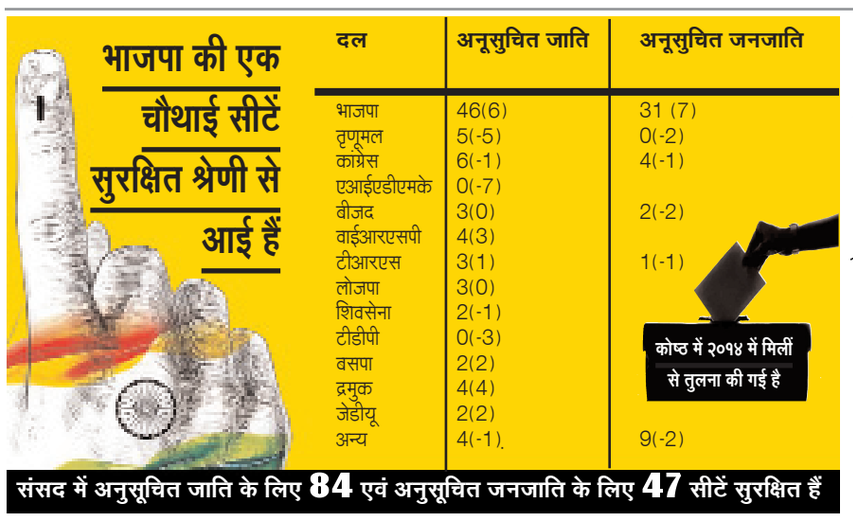

दल	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
भाजपा	46(6)	31 (7)
तृणमूल	5(-5)	0(-2)
कांग्रेस	6(-1)	4(-1)
एआईएडीएमके	0(-7)	
बीजद	3(0)	2(-2)
वाईआरएसपी	4(3)	
टीआरएस	3(1)	1(-1)
लोजपा	3(0)	
शिवसेना	2(-1)	
टीडीपी	0(-3)	
बसपा	2(2)	
द्रमुक	4(4)	
जेडीयू	2(2)	
अन्य	4(-1).	9(-2)

ट्विट

अर्थी को कांधा देतीं स्मृति इरानी को देखकर अनेक लोगों ने उन्हें महिला सशक्तिकरण की प्रतीक कहा। वह सराहना योग्य हैं, वर्जनाएं टूटनी जरूरी हैं। अवरोध या वर्जनाएं पहले भी टूटी हैं। वैज्ञानिक विक्रम साराभाई की चिता को उनकी पुत्री मल्लिका ने मुखाग्नि दी थी।

सलिल त्रिपाठी, वरिष्ठ लेखक
@saliltripathi

पर्यावरण

राजीव मंडल

पढ़ाई से ज्यादा यह है जरूरी

विश्व भर में खासकर भारत में पर्यावरण की क्षति किस कदर हुई है, यह तथ्य मौसम में व्यापक बदलाव और असमय लाखों की संख्या में हुई मौत से समझा जा सकता है। अमेरिका के 'हेल्थ इफेक्ट्स इंस्टिट्यूट' की रिपोर्ट के अनुसार भारत में वायु प्रदूषण के कारण 2017 में 12 लाख लोग मारे गए। वर्तमान में वायु प्रदूषण के उच्च स्तर के कारण दक्षिण एशिया में बच्चों की औसत जीवन प्रत्याशा में ढाई साल की कमी आएगी, जबकि वैश्विक जीवन प्रत्याशा में 20 महीने की कमी आएगी। ये सारी बातें एक बार फिर इसलिए चर्चा के केंद्रबिंदु में हैं क्योंकि हाल ही में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने देशभर के विश्वविद्यालयों में अनिवार्य रूप से पर्यावरण विषय को पढ़ाने को कहा है।

यूजीसी का यह फैसला स्वागतयोग्य है, मगर अभी भी यह निर्णय कई बिंदुओं पर अधूरा है। प्रदूषण की मार का वैश्विक तौर पर हर आम और खास किस तरह सामना कर रहे हैं, यह सबके सामने है। सो सिर्फ रूटीन पढ़ाई करके आप पर्यावरण को बेहतर नहीं बना सकते हैं। इसके लिए पढ़ाई के तौर-तरीकों को बदलना होगा। उसके आयामों को 360 डिग्री बदलने की जरूरत है। इसके लिए सालों पुराने पाठ्यक्रम को नये कलेवर में लाना होगा। हमारे देश में यह कमी है कि हम अपने कोर्स में जल्दी-जल्दी बदलाव नहीं करते हैं, जबकि हमारी सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय और प्रशासकीय समस्याएं गतिशील हैं। हमें इस जड़ता को खत्म करना होगा। विदेशों में सालों-साल तक चलने वाले कोर्स का कोई अस्तित्व ही नहीं है। वहां तो हर साल विषयों के कोर्स में बदलाव किए जाते हैं। वहां सेशन शुरू होने के पहले ही संक्षेप में बता दिया जाता है कि इस साल क्या-क्या पढ़ाया जाएगा? इसके उलट हमारे यहां 15 साल 20 साल पुराने कोर्स अभी भी पढ़ाए जाते हैं। कई कोर्स तो इतने पुराने हो गए हैं कि अब उनकी वर्तमान समय में कोई प्रासंगिकता नहीं रह गई है। इसे समझने की आवश्यकता है। आशय यह है कि गैर महत्त्वपूर्ण पाठ्यक्रम को खत्म करना होगा। कुल

मिलाकर नये पाठ्यक्रम के लिए लचीला रुख अपनाना होगा। यह कहा जा सकता है कि प्रकृति की सुरक्षा के लिए युवा और छात्रों की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। नई पीढ़ी को बोरियत से बाहर निकालना समय की मांग है। अगर इसमें व्यापक तौर पर तब्दीली नहीं लाई गई तो पठन-पाठन के जरिये बदलाव की उम्मीद करना बेमानी होगी।

पिछले कई साल से यूजीसी विश्वविद्यालयों-शिक्षण संस्थानों-कॉलेजों को पत्र लिखकर सर्वोच्च न्यायालय के आदेश का पालन करने हुए अंडर ग्रेजुएट स्तर पर पर्यावरण विज्ञान विषय को अनिवार्य रूप से पढ़ाने के आदेश दिए गए, लेकिन बताया जाता है कि देशभर के कुल 706 विश्वविद्यालयों में से 306 विश्वविद्यालयों ने इस विषय को अभी तक शुरू नहीं किया है। शैक्षणिक स्तर पर यह लापरवाही चिंता के साथ-साथ निराशा का माहौल भी पैदा करती है। ऐसा नहीं होना चाहिए। ऐसा भी देखा गया है कि कई विश्वविद्यालयों-संस्थानों ने पर्यावरण विज्ञान विषय शुरू तो किया है, मगर वह मनमाने तरीके से इस विषय को पढ़ा रहे हैं। जबकि यूजीसी ने कहा है कि पर्यावरण अध्ययन पर मॉड्यूल को पढ़ाने का काम उन शिक्षकों को सौंपने की जरूरत है, जो यूजीसी द्वारा निर्धारित योग्यताएं पूरी करते हैं।

पर्यावरण विज्ञान विषय को पढ़ाने के लिए उसी विषय में उच्च उपाधि प्राप्त शिक्षकों की नियुक्ति करना अपेक्षित है, लेकिन यह विषय दूसरे विषयों के स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त शिक्षकों से पढ़वाया जा रहा है, जिसके चलते पर्यावरण विज्ञान के उच्च उपाधि प्राप्त उम्मीदवार बेरोजगारी होकर भटक रहे हैं। कहने का तात्पर्य है कि शिक्षा से जुड़े नीतिकार और विशेषज्ञों को यह दायित्व समझना होगा और जिम्मेदारी के साथ देश की बेहतरी के लिए भविष्य के बेहतरीन छात्र तैयार करने होंगे। इसको हमारी दिनप्रतिदिन की जो समस्या है, उससे जोड़ना होगा; कनेक्टिविटी बढ़ानी होगी। एक और अहम सुझाव यह है कि पर्यावरण या प्रदूषण की समस्या को हमें स्वास्थ्य से जोड़ना होगा। जब तक प्रदूषण के दुष्परिणामों की जानकारी जनता को नहीं होगी, तब तक उसमें बेहतरी की गुंजाइश नहीं के बराबर होगी। हम अक्सर देखते हैं कि किडनी/लीवर आदि गंभीर बीमारियां प्रदूषण और खराब पानी और खानपान की वजह से होती हैं। अगर प्रदूषण के बारे में लोग जागरूक होंगे तो तस्वीर निश्चित तौर पर बदल सकती है। पराली जलाने, जंगलों की अंधाधुंध कटाई के दुष्परिणामों को जनता को बताने की जरूरत है। यानी कई स्तर पर काम करने से बेहतर परिणाम आएंगे।

स्वप्न

जग्गी वासुदेव

आप स्वप्न एक बेहोशी में बुनी हुई कल्पना है। कुछ लोगों ने कई बार सपनों का प्रयोग अपने मन के उन विभिन्न आयामों में जाने के लिए किया है, जिन तक सामान्य रूप से उनकी पहुंच नहीं होती। तो वहां प्रवेश करने के लिए उन्हें स्वप्न एक अच्छे साधन के रूप में लगते हैं। विशेष रूप से कुछ संस्कृतियों में, जैसे कि ऑस्ट्रेलिया की एबओरिजिन जनजाति तथा उत्तर

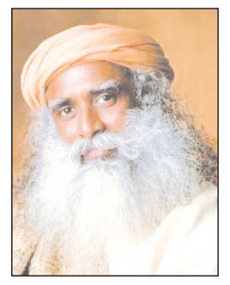

अमेरिका की कुछ जनजातियों ने सपनों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया, लेकिन उन सपनों का उपयोग केवल तांत्रिक प्रक्रियाओं में ही कर सके। असल रहस्यवाद हुआ ही नहीं। भारत में कल्पना शक्ति का प्रयोग शक्तिशाली रूप से तांत्रिक प्रक्रियाओं में होता है। बहुत से लोग तांत्रिक प्रक्रियाओं का प्रयोग दूसरों को नुकसान पहुंचाने के लिए कर रहे हैं। लेकिन इनका प्रयोग कुछ अद्भुत कामों के लिए भी हो सकता है। स्वप्न आपके मन का बस एक और आयाम है। केवल तब जब आप उसके पार जाते हैं तो ही उस आयाम को छू पाते हैं, जिसे आजकल रहस्यवाद के नाम से जाना जाता है। रहस्यवाद वह है, जिसे आप अपने भौतिक शरीर या मन से छू नहीं सकते। आपके मन की इतनी योग्यता है ही नहीं। शरीर की भी यह योग्यता नहीं है। आपके अंदर एक नये आयाम को जागृत होना होगा जिससे आप रहस्यवाद के आयाम को छू सकें। बेहतर होगा कि हम इसे उस तरीके से समझें, नहीं तो हर सपने को, हर काल्पनिक परिस्थिति को रहस्यवाद कह दिया जाएगा। स्वप्न एक तरह का साधन है, लेकिन बहुत ही नाजुक साधन है। हमारे पास और भी बेहतर साधन हैं पर उनका उपयोग करने के लिए मनुष्य को अपने अंदर बेहतर ढंग से व्यवस्थित होना होगा। उदाहरण के लिए मैं इस तरह से हूं, अगर मैं अपनी आंखें बंद कर लेता हूं तो मेरे लिए दुनिया गायब हो जाती है। लोग पूछते हैं, 'यह कैसे संभव है'? बस, यही तो पलकों का काम है। ये आपको इसीलिए दी गई हैं। जब आप इन्हें बंद कर लेते हैं, तो सब कुछ खत्म हो जाना चाहिए। जैसे, आपके घर में एक खिड़की है। जब आप उसे बंद करते हैं तो इतना शक्तिशाली सूर्य भी बाहर बंद हो जाता है, उसका प्रकाश अंदर नहीं आ सकता। अगर एक खिड़की यह काम कर सकती है तो पलकें क्यों नहीं? ये इसलिए ऐसा नहीं कर पाती क्योंकि आपने अपने अंदर एक झूठी दुनिया बना रखी है।

रीडर्स मेल

बाहरी को दें कमान

हाल ही में संपन्न लोक सभा चुनाव में जिस तरह कांग्रेस का बुरा प्रदर्शन रहा, उससे पार्टी नेतृत्व में बदलाव की कयासबाजी जोरों पर है। अगर कांग्रेस के नेता चाहते हैं कि जनता पार्टी को एक परिवार के कठपुतली के रूप में न देखें तो उसके लिए बदलाव करने की जरूरत है। पार्टी के नेतृत्व की जिम्मेदारी किसी बाहरी व्यक्ति को देनी होगी। साथ ही युवा नेताओं को ज्यादा मौके देने होंगे। क्योंकि भारत की 65 फीसद आबादी की उम्र 35 वर्ष या इससे कम है। हार और जीत में इनकी अहम भूमिका होती है। इससे पार्टी की विचारधारा को फैलाने में भी मदद मिलेगी।

मोनू कुमार, पटना कॉलेज

रामदेव का सही सुझाव

योगगुरु रामदेव ने देश की कुछ समस्याओं; गरीबी और बेरोजगारी के लिए जनसंख्या नियंत्रण के लिए कानून लाए जाने की इच्छा जाहिर की है। उन्होंने कहा कि दो बच्चों के बाद पैदा होने वाले बच्चों को मताधिकार, चुनाव लड़ने के अधिकार और अन्य सरकारी सुविधाओं से वंचित कर देना चाहिए। लेकिन इसमें बच्चे का क्या कसूर? कसूर तो उन लोगों का है, जो बढ़ती जनसंख्या के दुष्परिणामों की अनदेखी करते हुए इसे बढ़ाने में अपना योगदान देते हैं। अब समय आ चुका है कि सरकार देश में बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए गंभीरता दिखाते हुए जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाकर इसे गंभीरता से लागू करे और इसमें सभी धर्मों, संप्रदाय के लोगों को लाया जाना चाहिए।

राजेश चौहान, जालंधर

इंटरनेट की दुश्वारियां

रूस, ईरान और सीरिया जैसे बहुत से देशों को इंटरनेट के पश्चिमी देशों के नियंत्रण में होने से एतराज है। इन देशों को पश्चिमी देशों के जीवन मूल्यों से परेशानी है। उन्हें लगता है कि इंटरनेट के जरिए उनके देशवासियों को पश्चिमी देश बरगला सकते हैं, प्रभावित कर सकते हैं। क्योंकि इंटरनेट की दुनिया इतनी खुली है कि कोई किसी को कुछ भी भेज सकता है। या किसी से कुछ भी ले सकता है। हमारी कभी राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर, तो कभी अपने अवाम को बाहरी दुनिया के खतरों से दूर रखने के नाम पर। रोजब-रोज इंटरनेट पर नई पाबंदियां आयद की जा रही हैं। आज कई देश मिलकर भी इंटरनेट के बेलगाम घोड़े को काबू में करने मे जुटे हैं।

प्रियंबदा, गोरखपुर

चोटी फतह करने की मारामारी

माऊंट एवरेस्ट पर पर्वतारोहण के लिए गए करीब दो सौ पर्वतारोहियों को इसकी चोटी फतह करने के लिए कई-कई घंटों तक इंतजार करना पड़ा। वहां लगभग ट्रैफिक जाम की स्थिति हो गई। इस बेतहाशा भीड़ की वजह से एक सप्ताह में इस 29000 फीट ऊंची चोटी पर 18 पर्वतारोहियों की मौत हो चुकी है। चिंतनीय है कि पृथ्वी के सुंदरतम स्थल को एक ठंडा कब्रगाह बनाया जा रहा है। साथ ही एक वर्ष में सैकड़ों की संख्या में लोगों के पहुंचने से उनके द्वारा छोड़े गए अवशिष्ट पदार्थ जैसे मल-मूत्र, खाली बोतल, खाद्य पदार्थ और आक्सीजन सिलेंडर से करीब 50टन कचरा एवरेस्ट के आसपास जमा हो गया है। बढ़ती भीड़ को नियंत्रित करने की सख्त जरूरत है।

संजय डागा, इंदौर

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा
राष्ट्रीयता • कर्तव्य • समर्पण

सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक सी बी सिंह द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित।
समूह संपादक - मनोज तोमर। स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र* ।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स - 23352370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750

वर्ष-28, अंक 10091 — आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZD- 38/2018-2020 — *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी